PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

सन्धि

- दो वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते है। सन्धि करते समय कभी-कभी परिवर्तन एक अक्षर में तथा कभी-कभी दोनों अक्षरों मे परिवर्तन होता है। जबकि कभी-कभी दोनों स्थान पर एक तीसरा अक्षर बन जाता है।

जैसे-

सुर + इन्द्र -	सुरेन्द्र
विद्या + आलय -	विद्यालय
सत् + आनन्द -	सदानन्द

सन्धि के प्रकार (3 प्रकार)

1. स्वर सन्धि (वृद्धि सन्धि, गुण सन्धि ,वृद्धि सन्धि ,अयादि संधि ,यण सन्धि)
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

स्वर सन्धि

- स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद हैं-

1. दीर्घ स्वर सन्धि
2. गुण स्वर सन्धि
3. वृद्धि स्वर सन्धि
4. यण स्वर सन्धि
5. अयादि स्वर सन्धि

1. दीर्घ सन्धि

ह्रस्व या दीर्घ स्वरों के मिलने से उनके स्थान में दीर्घ स्वर हो जाता है। वर्गों का संयोग चाहे ह्रस्व + ह्रस्व हो या ह्रस्व + दीर्घ और चाहे दीर्घ + दीर्घ हो। इस सन्धि को दीर्घ सन्धि कहते हैं; जैसे-

अ + अ = आ –	पुष्प + अवली	= पुष्पावली
अ + आ = आ –	हिम + आलय	= हिमालय
आ + अ = आ –	माया + अधीन	= मायाधीन
आ + आ = आ –	विद्या + आलय	= विद्यालय
इ + इ = ई –	कवि + इच्छा	= कवीच्छा
इ + ई = ई –	हरी + ईश	= हरीश
इ + इ = ई –	मही + इन्द्र	= महीन्द्र
इ + ई = ई –	नदी + ईश	= नदीश
उ + उ = ऊ –	सु + उक्ति	= सूक्ति

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

उ + ऊ = ऊ –	सिन्धु + ऊर्मि	= सिन्धूर्मि
ऊ + उ = ऊ –	वधू + उत्सव	= वधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ –	भू + ऊर्जा	= भूर्जा

2. गुण सन्धि

यदि अ या आ के आगे इ या ई स्वर आए, तो दोनों के स्थान ए हो जाता है यदि अ या आ के आगे उ या ऊ आए तो दोनों के स्थान पर ओ हो जाता है। यदि अ या आ के आगे ऋ आए दो दोनों के स्थान पर अर् हो जाता है। वहां गुण सन्धि होती है।

- अ, आ + इ, ई = ए
- अ, आ + उ, ऊ = ओ
- अ, आ + ऋ = अर्

जैसे -

• अ + इ = ए –	उप + इन्द्र	= उपेन्द्र
• अ + ई = ए –	गण + ईश	= गणेश
• आ + इ = ए –	महा + इन्द्र	= महेन्द्र
• आ + ई = ए –	रमा + ईश	= रमेश
• अ + उ = ओ –	चन्द्र + उदय	= चन्द्रोदय
• अ + ऊ = ओ –	समुद्र + ऊर्मि	= समुद्रोर्मि
• आ + उ = ओ –	महा + उत्सव	= महोत्सव
• आ + ऊ = ओ –	गंगा + उर्मि	= गंगोर्मि
• अ + ऋ = अर् –	देव + ऋषि	= देवर्षि
• आ + ऋ = अर –	महा + ऋषि	= महर्षि

3. वृद्धि सन्धि

यदि अ या आ के आगे ए या ऐ स्वर आए, तो दोनों के स्थान ऐ हो जाता है यदि अ या आ के आगे ओ या औ आए तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है। वहां गुण सन्धि होती है।

- अ, आ + ए, ऐ = ऐ
- अ, आ + ओ, औ = औ

जैसे-

• अ + ए = ऐ –	पुत्र + एषणा	= पुत्रैषणा
• अ + ऐ = ऐ –	मत + ऐक्य	= मतैक्य
• आ + ए = ऐ –	सदा + एव	= सदैव
• आ + ऐ = ऐ –	महा + ऐश्वर्य	= महैश्वर्य
• अ + ओ = औ –	जल + ओकस	= जलौकस

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- अ + औ = औ – परम + औषध = परमौषध
- आ + ओ = औ – महा + ओषधि = महौषधि
- आ + औ = औ – महा + औदार्य = महौदार्य

4. यण सन्धि

जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आता है तो ये क्रमश,य, व, र् में परिवर्तित हो जाते हैं,वहां यण सन्धि होती हैं।

- इ, ई + भिन्न स्वर = य
- उ, ऊ + भिन्न स्वर = व
- ऋ + भिन्न स्वर = र

जैसे -

- इ + अ = य् – अति + अल्प = अत्यल्प
- ई + अ = य् – देवी + अर्पण = देव्यर्पण
- उ + अ = व् – सु + आगत = स्वागत
- ऊ + आ = व – वधू + आगमन = वध्वागमन
- ऋ + अ = र् – पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

5. अयादि सन्धि

जब ए, ऐ, ओ और औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो 'ए' का अय, 'ऐ' का आय् , 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है;

- ए + भिन्न स्वर = अय्
- ऐ + भिन्न स्वर = आय्
- ओ + भिन्न स्वर = अव्
- औ + भिन्न स्वर = आव्

जैसे -

- ए + अ = अय् – ने + अयन = नयन
- ऐ + अ = आय् – नै + अक = नायक
- ओ + अ = अव् – पो + अन = पवन
- औ + अ = आव् – पौ + अक = पावक

2. व्यंजन सन्धि

- व्यंजन के साथ व्यंजन/स्वर का मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

1. यदि स्पर्श व्यंजन के वर्गों के पहले व्यंजन (क्, च्, ट्, त्, प्) के आगे कोई स्वर आए, तो व्यंजन अपने वर्ग के तीसरे व्यंजन में बदल जाता है।

जैसे-

- वाक् + ईश = वागीश

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- दिक् + अम्बर = दिगम्बर
- षट् + आनन = षडानन
- उत् + घाटन = उद्घाटन

2. यदि स्पर्श व्यंजन के पहले व्यंजन के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा या अंतःस्थ व्यंजन(य, र, ल, व) आये ,तो वह अपने वर्ग के तीसरे व्यंजन में बदल जाता है।

जैसे-

- जगत् + गुरु = जगद्गुरु
- वाक् + बल = वाग्बल
- सत् + भावना = सद्भावना
- उत् + धार = उद्धार

3. यदि पहले शब्द के अंत मे त् आया हो तथा उसके बाद च या छ आया हो, तो त् बदलकर च् हो जाता है।

जैसे-

- उत् + छवास = उच्छवास
- सत् + चरित्र = सच्चरित्र
- उत् + चारण = उच्चारण

4. यदि पहले शब्द के अंत मे त् और दूसरे शब्द के आरंभ मे स हो, तो त् को बदलते नहीं है।

जैसे-

- उत् + सर्ग = उत्सर्ग
- सत् + साहस = सत्साहस
- सत् + संगति = सत्संगति

5. यदि पहले शब्द के अंत मे द् हो और उसके बाद अघोष व्यंजन हो तो द् को त् मे बदल दिया जाता है।

जैसे-

- सद् + कार = सत्कार
- तद् + पर = तत्पर
- उद् + साह = उत्साह
- सद् + कर्म = सत्कर्म

6. यदि पहले शब्द के अंत में क्, ट्, त् आए और दूसरे शब्द के आरम्भ में म, न आये हो तो ट् और त् को पंचम वर्ण मे बदल दिया जाता है।

जैसे-

- षट् + मास = षण्मास
- जगत् + नाथ = जगन्नाथ

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- सत् + मति = सन्मति
- वाक् + मय = वाङ्मय
- सत् + मार्ग = सन्मार्ग

7. यदि पहले शब्द के अन्त मे त् तथा बाद में ह्रस्व या दीर्घ ज, ल आए तो, त् को ज् तथा ल् मे बदल देते है।

जैसे-

- उत् + ज्वल = उज्ज्वल
- सत् + जन = सज्जन
- तत् + लीन = तल्लीन
- उत् + लास = उल्लास

8. यदि पहले शब्द का अंतिम वर्ण या दूसरे शब्द का पहला वर्ण मूर्धन्य (ऋ, र, ट, ठ, ड, ढ, ण, ष) हो, तो दोनो को मूर्धन्य मे बदल दिया जाता है।

जैसे-

- पुर् + न = पूर्ण
- दुष + त = दुष्ट
- तृष् + ना = तृष्णा
- ऋ + न = ऋण
- विष् + नु = विष्णु

9. यदि इ या उ के बाद स आया हो, तो वह 'ष' मे बदल जाता है।

जैसे -

- नि + सेध = निषेध
- वि + सम = विषम
- नि + सद्ध = निषिद्ध
- अनु + संगी = अनुषंगी

10. जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आगे 'छ' आता है तो 'छ' के पहले 'च' बढ़ जाता है;

जैसे-

- पद + छेद = पदच्छेद
- गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र
- आ + छादन = आच्छादन
- परि + छेद = परिच्छेद

11. यदि 'म' के आगे कोई अन्तस्थ(य, र, ल, व) या ऊष्म व्यंजन (श्, ष्, स्, ह) आए , तो 'म' अनुस्वार में बदल जाता है;

जैसे-

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- सम् + सार = संसार
- सम् + रक्षा = संरक्षा
- सम् + योग = संयोग
- स्वयम् + वर = स्वयंवर

3. विसर्ग सन्धि

- विसर्गों का प्रयोग सिर्फ संस्कृत भाषा में होता है। हिन्दी में भी विसर्गों का प्रयोग कम होता है। जैसे-

अतः, पुनः, प्रायः, शनैः शनैः

(1) यदि विसर्ग के आगे श, ष, स आए तो वह क्रमशः श्, ष्, स् में बदल जाता है।

जैसे

- निः शंक + निश्शंक =
- दुः शासन + दुश्शासन =
- निः सन्देह + निस्सन्देह =
- नि संग + : =निस्संग
- निः शब्द + निश्शब्द =
- निः स्वार्थ + निस्स्वार्थ =

(2) यदि विसर्ग से पहले इ या उ हो और बाद में र आए तो विसर्ग का लोप हो जाएगा और इ तथा उ दीर्घ ई, ऊ में बदल जाते है।

जैसे-

- निः रव + नीरव =
- निः रोग + नीरोग =
- निः रस + नीरस =

(3) यदि विसर्ग के बाद 'चछ-', 'टठ-' तथा 'तथ-' आए तो विसर्ग क्रमशः 'श्', 'ष', 'स्' में बदल जाते हैं।

जैसे-

- निः तार + निस्तार =
- निः छल + निश्छल =
- धनु टंकार + :धनुष्टंकार =
- निः ठुर + निष्ठुर =
- दु चरित्र + : दुश्चरित्र =

(4) विसर्ग के बाद क, ख, प, फ रहने पर विसर्ग में कोई विकार (परिवर्तन)नहीं होता है।

जैसे-

- प्रातकाल + : काल:प्रात =
- पयः पान + पयःपान =

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- अन्तः करण + अन्तःकरण =

(5) यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण अथवा य, र, ल, व में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग 'र' में बदल जाता है।

जैसे-

- निः धन + निर्धन =
- दुः निवार + दुर्निवार =
- दुः बोध + दुर्बोध =
- निः गुण + निर्गुण =
- नि आधार + : निराधार =
- निः झर + निर्झर =

(6) यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए और बाद में कोई भी स्वर आए तो भी विसर्ग र् में बदल जाता है।

जैसे-

- निः उपाय + निरुपाय =
- नि आशा + : निराशा =
- निः ईह + निरीह =
- निः अर्थक + निरर्थक =

(7) यदि विसर्ग से पहले अ आए और बाद में य, र, ल, व या ह आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है।

जैसे-

- पुरः हित + पुरोहित =
- मनः रम + मनोरम =
- मनः विकार + मनोविकार =
- मन रथ + : मनोरथ =

(8) यदि विसर्ग से पहले इ या उ आए और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है।

जैसे-

- निः कर्म + निष्कर्म =
- निः काम + निष्काम =
- निः पाप + निष्पाप =
- निः कपट + निष्कपट =
- निः फल + निष्फल =

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090